भारत में विदेशी विश्वविद्यालय

हमारा देश भारत पारंपरिक और सांस्कृतिक शिक्षण के लिए जाना जाता है। पुरातन काल में ऐसा भी वक्त था जब सब लोग शिक्षण प्राप्त करने को योग्य नहीं मानते थे। उस काल में एक व्यक्ति के जाती और धर्म के आधार पर समाज में समान अधिकार नहीं देते थे। ऐसा ही जब असमानता और अज्ञान का अंधकार बढती गई महात्मा गान्धी, स्वामी विवेकानन्द जैसे महान लोग सामने आये। उनके सोच और पौरुत्व अभियान के मदद से समाज में फिरसे ज्ञान की रोशनी जाग उठी। सब लोग असमानता को छोडकर शिक्षण का महत्व जानकर ज्ञान के पीछे-पीछे जाने लगे।

आज हम सब लोग अच्छी शिक्षण पा रहे हैं। सरकार ने सब लोगों को शिक्षण के क्षेत्र में बहुत सुविधा और व्यवस्था कार्यनिरत किया है। आज कोई भी ऐसा नहीं जो शिक्षण से

वंचित है। असल में क्या पहले के ज़माने में मिलने वाले शिक्षण आज की आधुनिक युग में मिलने वाले शिक्षणा जैसी है? अगर गोर से देखे तो बहुत सारे बदलाव आज हुआ है। भारत के राष्ट्रीय भाषा क्या है? आपका जवाब होगा "कोई भी नहीं"। यह बात तो सब लोग जानते है। भारत इकलोता ऐसा देश है जहाँ सबसे ज्यादा विभिन्न रीती के भाषाएं बोले जाते हैं। अलग अलग राज्य में अलग-अलग भाषा बोले जाते हैं। हमारा भाषा और संस्कृति हमारा अभिमान है।

लेकिन आजकल अन्ग्रेजी भाषा से सब लोग कुछ ज्यादा ही प्यार में हैं। हमारा देश अब पहले के जैसे नहीं रहा। हम सबके जीवन शैली, बात करने की शैली, रीति-रिवाज, संस्कृति में बहुत बदलाव है। आज के आधुनिक काल के बच्चों को उनका मातृ-भाषा ही ठीक से बोलना नहीं आता। यह सब के कारण क्या है? उत्तर होगा हम सबका सोच। अंग्रेजी बहुत प्रसिद्ध भाषा है। इसके वजह से आज कल के माता-पिता का यह सोचते हैं

अगर उनका बच्चा वह भाषा सीखेगा तो उसको समाज में ज्यादा प्रामुख्यता मिलेगा। सच बताऊँ तो बच्चे सिर्फ अंग्रेज भाषा ही नहीं सीख रहे लेकिन विदेशी संस्कृति भी साथ में अपने जीवन से जोड रहे हैं। हमारे देश से साल में बहुत सारे बच्चे और बडे शिक्षण और काम के खोज में विदेश जाते हैं। उसी तरह विदेशी भी शिक्षण के तलाश में यहाँ आते हैं। हमारे देश में ज्यादा तर पाठ शाला में अंग्रेजी भाषा में ही सिखाते हैं। उसी तरह हमारे पाठ पुस्तक में विदेश और उनसे मिलते विषय को ही ज्यादा प्रामुख्यता देकर बच्चों को पढाते हैं। इसी के वजह से बहुत सारे बच्चे मातृभाषा को सीखने से वंचित होते हैं।

आज की इस आधुनिक युग में ऐसा लगता है कि नव माध्यम ने हम सब को एक मंच पर जोड दिया हो। क्यों कि नव माध्यम हमारा जीवन का एक बहु मुख्य पात्र बन गया है। विज्ञान की प्रसिद्ध आविष्कारों में दूरवाणी है। अंतर्जाल के मदद से कोई भी इनसान कोई भी

चीज़ के बारे में जान सकतें हैं। दूरवाणी में लोग इन्स्टाग्राम, यूट्यूब जैसे अलग-अलग प्लाटफार्म से लोग व्यसन हो चुके है। आज कल माध्यम में विदेशी संस्कृति से लोग विस्मित हैं। इसके वजह से लोग उन सबके बारेमे और जानते-जानते अपने जिन्दगी में भी विदेशी विचारों के मार्ग से जाने लग गयें हैं।

यह बहुत ही सोचनीय बात है कि सरकार इस बढते विदेशी संस्कृति को प्रतिबंध क्यू नहीं कर रही। हमारा सरकार विदेश से सिर्फ सामान का बदलाव ही नहीं लेकिन उनके संस्कृति को भी हमारी देश में ला रहे हैं। इन सबका शुरुआत तब हुआ जब ब्रिटीश लोगों हमारे देश आया और उनका प्रणाली और विचार का आद्धलिन से हमारा संबन्ध बढ गया। ब्रिटिश लोगों ने हमारी चीज़ों को ही नहीं लेकिन हमारे पुरातन काल के शिक्षण व्यवस्था को भी नष्ट किया है।

भारत में आजकल दिखाने वाले और बनाने वाले सिनिमा ज्यादातर दूसरे देश के प्रेरित से ही बनाया जा रहा है। क्यों कि वो लोग जानते है कि लोगों को उनकी तरफ खींच ने में विदेश से मिलते-झुलते विषयों से ही सध्य है। यह सच बात है कि विदेशी के आविष्कार जैसे कृतिमबुद्धिमना, दूरदर्षन, दूरवाणी सब ने हमारे देश की प्रगनी में सहायक बना है लेकिन दूसरे विचार से देखे और जाने तो इन सबने हमारा संस्कृति में बहुत प्रभाव किया है।

यह बोलना गलत नहीं होगा की हमारा देश के शिक्षण विदेशी शिक्षण से बदल रहा है। पहले के जमाने में हमारा देश में सांस्कृतिक संस्कार का स्वरूप था। वह संस्कार, वह वेष-भूषण, वह स्वच्छ सुंदर भाषा अब नही पर भी दिखाई नही देते। हमारे देश के लडका-लडकिया आजकल विदेशी पहन ने वाले कपडों से प्रभावित है। शहरों में हमारे सांस्कृतिक कपडे साडी से ज्यादा छोटे-छोटे कपडे ज्यादा बिकते हैं। जब बात

खाने की चीज़ में आती हैं तब हमारा देश पौष्टिक आहार के लिए प्रसिद्ध था। लेकिन आज कल बहुत सी विभिन्न रीति के आहार विलुप्त हो गये हैं। किसानों ने अपने खेतों में फसल उगाना छोड़ दिया है। शहरीकरण ज्यादा बढ़ गया है। आज की युव पीढ़ी काम ढूँढ़ते शहर पहुँच गये हैं। क्यों कि किसी को भी अब खेती करने में इच्छा नहीं। वह लोग सोचते हैं कि बड़े-बड़े कंपनियाँ, दफ्तर, कारखानों में काम करने से ज्यादा मर्यादा प्राप्त होता है। आज कल कृषि भूमि को नष्ट करकर शहरीकरण करने में सब लोग कार्य निरत हैं।

भारत में अलग-अलग धर्म के लोग अलग-अलग त्यौहार को मनाते थे। लेकिन आज कल त्यौहार की विचार और मनाने के तरीके में भी बदलाव आया है। ग्रामीण जगहों पर मनाने वाले उत्सव भी आजकल कम हो गया है। हमारे देश में पहले के समय में बहुत सारे संयुक्त परिवार थे। सब लोग

अपसी विश्वास के साथ प्यार से जीते थे। लेकिन आजकल सब बिछड कर अपने शुद्ध बान्धव को तोड़कर अलग-अलग जगह पर एकाल में अपने जीवन बसाते हैं।

अगर हम ठीक से समझे तो हमारे देश में होने वाले बदलाव और आभिवृद्धी करण विदेश में होने वाले विचारों से मिलते-जुलते हैं। भारत अब पहले जैसे नहीं रहा। हमारे देश के शौर्य व्यक्तियों ने ब्रिटिश लोगों को भगाकर हम सबको स्वतंत्र किया था। लेकिन अब खुद हमारा देश और नागरिक उनके जैसे धीरे धीरे बदल रहा है। देश की प्रणाली भी दूसरे देशों के क्रिया और विचारों से आदिन है। इस विषय को लेकर सरकार और ज्यादा मजबूत होनी चाहिए। पहले देश के अच्छी प्रगती के लिए कार्य लेना होगा। आज की समय खुद के देशों में नौकरी मिलना मुश्किल हो गया है क्यों कि दूसरे देश के लोगों को हमारे देश में आकर काम करने का मौका दे गया है।

काम के विषय में या किसी और के विषय में पहले प्रामुख्यता देश के नागरिक को ही देनी चाहिए। पिछले दिनों में कबरें में आया था कि शहरीकरण के लिए अरावल्ली पहाड़ी के तोड़ी हिस्से को काटा जाएगा। यह सच में निराशा वाली बात है। हमारा देश के लोग जंगल और जीव-जन्तुओं को भगवान के रूप में देखते थे। लेकिन आज कल क्या हो गया है सबको? अगर ऐसे ही चलता गया तो भारत की अस्तित्व मिट्टी में मिल जाएगी। भारत के नागरिक होने के नाते यह हमारा फर्ज है कि हमें देश की संस्कृति और शिक्षण रीती को बदलने से रोकना है। भविष्य के पीढ़ी को हमारे देश को स्वच्छ रूप से देना चाहिए। सरकार भी इससे जुड़े अभियान का चालन करना पड़ेगा। "हमारा देश हमारा अभिमान" यह नारा सब लोग जीवन में पालन करके देश की उन्नती में कार्यनिरत होना चाहिए। हमारे पूर्वज ने उनके पारंपरिक संस्कृति को हमें दिया है। वैसे ही हमें भी उसे बचाकर आगे पीढ़ी के को हस्तान्तर

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ
64-ാം
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 948

Participant Code: 042

करना चाहिए।